IJAER/May-June 2019/Volume-8/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

विदुर नीति और चाणक्य नीति का समीक्षात्मक अध्ययन

संपूर्ण सिंह बुरा
शोधार्थी
ओ. पी. जे. एस विश्वविद्यालय

डॉ निधि रस्तोगी
सहायक आचार्य
ओ. पी. जे. एस विश्वविद्यालय

सार

विदुर महाभारत के केंद्रीय पात्रों में से एक हैं। उन्हें राज्य के प्रशासन में लगे हस्तिनापुर के प्रधान मंत्री और पांडवों और कौरवों के चाचा के रूप में वर्णित किया गया है। राजा धृतराष्ट्र को दी गई उनकी सलाह से विदुर नीति नामक पुस्तक का निर्माण होता है। नैतिक आचरण, सलाह, परामर्श, मार्गदर्शन और निर्देश आज भी बहुत प्रासंगिक हैं। इसी तरह चाणक्य जिन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य को पढ़ाकर उन्हें सम्राट बनाया, उन्होंने भी उन्हें जीवन में सभी को सलाह दी। निर्णय लेने के हर कदम पर चाणक्य की शिक्षा उनके लिए मूल्यवान थी। इन दोनों पुस्तकों के बीच संबंध यह है कि वे नागरिकों और शासक के लिए नैतिक मार्गदर्शन में लगी हुई हैं। राजा अलगाव या प्रजा में काम नहीं कर सकता। इस आधुनिक दुनिया में जहां मूल्य परिधि पर चले गए हैं और महत्वहीन और अनुपयुक्त चीजें केंद्र में आ गई हैं।

मुख्य शब्द

अर्थशास्त्र, राजनीति, शासक, न्याय, प्रजा

भूमिका

विदुर महाभारत के केंद्रीय पात्रों में से एक हैं। उन्हें राज्य के प्रशासन में लगे हस्तिनापुर के प्रधान मंत्री और पांडवों और कौरवों के चाचा के रूप में वर्णित किया गया है। विदुर पांडवों के सबसे सम्मानित सलाहकार थे जिन्होंने कई मौकों पर उन्हें अपने चचेरे भाइयों की खतरनाक योजनाओं से बचाया। वह अपने काम में सीधे साधे, धर्मी, दयालु और ईमानदार थे। एक मंत्री के रूप में वह सबसे शानदार प्रकाश के रूप में है जिसने ईर्ष्या और भ्रष्टाचार के अंधेरे को दूर किया। उन्हें सत्य, कर्तव्यपरायणता और निष्पक्ष निर्णय का प्रतीक माना जाता है। उन्हें महाभारत की आंतरिक चेतना का अवतार माना जाता है। उन्होंने युद्ध में भाग नहीं लिया था फिर भी विदुर के संवादों को जाने बिना युद्ध की बारीकियों और संवादों को समझा नहीं जा सकता। राजा धृतराष्ट्र के साथ उनके संवाद संकलित हैं और विदुर नीति के रूप में जाने जाते हैं। यह कार्य एक तरह से चाणक्यनीति का अग्रदूत माना जाता है। इसलिए दोनों नीतियों को पढ़ने और उन पर विचार करने और आज उनकी प्रासंगिकता लाने का प्रयास किया गया है। विदुर नीति में सही आचरण और जीवन की नैतिकता पर विदुर के सिद्धांत शामिल हैं। समय ने प्रकट कर दिया कि अंधे राजा ने इसमें से कितना ग्रहण किया और कितना समझौता किया। उन्होंने अपने निष्पक्ष विचारों और व्यावहारिक ज्ञान के लिए महात्मा की उपाधि प्राप्त की।

चाणक्य या विष्णु गुप्त मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के प्रसिद्ध मंत्री थे, जिन्हें उनके द्वारा पढ़ाया और ढाला गया था। चाणक्य को भारत में अर्थशास्त्र, दर्शन और राजनीति विज्ञान के क्षेत्र का अग्रणी माना जाता था। प्रजा, राजा और आम लोगों के लिए उनकी सलाह आज भी प्रासंगिक और सार्थक मानी जाती है। उनकी दो रचनाएँ अर्थात् अर्थ शास्त्र और चाणक्य नीति भारत के इस महान सपूत के ज्ञान के प्रमाण हैं। अर्थशास्त्र मुख्य रूप से मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, युद्ध रणनीतियों, प्रशासन पर चर्चा करता है और एक शासक के कर्तव्यों की रूपरेखा भी बताता है। जबकि चाणक्य नीति जीवन के आदर्श तरीके, नैतिकता और अच्छे व्यवहार के महत्व पर एक ग्रंथ है।

विदुरनीति राज्य कला और राजनीतिक दर्शन पर एक संस्कृत ग्रंथ है, जिसे भारतीय महाकाव्य महाभारत के एक पात्र, ऋषि विदुर द्वारा लिखा गया है। पाठ को 13 अध्यायों में बांटा गया है, जिनमें से प्रत्येक सरकार और राजनीति के एक अलग पहलू से संबंधित है। विदुरनीति को भारतीय परंपरा में राजनीतिक दर्शन पर सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक माना जाता है, और इसका प्रभाव इस विषय पर बाद के कई कार्यों में देखा जा सकता है।

पाठ की शुरुआत राजत्व की प्रकृति और एक अच्छे शासक के गुणों की चर्चा से होती है। विदुर का तर्क है कि राजा राज्य का अवतार है, और उसके कार्यों का उसकी प्रजा की भलाई पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वह शासक में न्याय और करुणा के महत्व पर भी जोर देता है और तर्क देता है कि एक अच्छे राजा को हमेशा अपने लोगों के सर्वोत्तम हित में कार्य करना चाहिए।

विदुरनीति के निम्नलिखित अध्याय न्याय के प्रशासन, राजकोष के प्रबंधन, युद्ध के संचालन और राजा और उसके मंत्रियों के बीच संबंधों सहित कई विषयों से संबंधित हैं। विदुर इनमें से प्रत्येक विषय पर विस्तृत सलाह प्रदान करते हैं, और उनकी अंतर्दृष्टि आज भी प्रासंगिक है।

भारतीय राजनीतिक दर्शन के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए विदुरनीति एक मूल्यवान संसाधन है। यह एक व्यापक और व्यावहारिक कार्य है जो इस विषय पर जानकारी का खजाना प्रदान करता है। पाठ भी अच्छी तरह से लिखा गया है और समझने में आसान है, जिससे इसे पाठकों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँचा जा सकता है।

विदुरनीति के कुछ प्रमुख अंश इस प्रकार हैं

- राजा राज्य का अवतार होता है, और उसके कार्यों का उसकी प्रजा की भलाई पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- एक अच्छे शासक को न्यायप्रिय, दयालु और बुद्धिमान होना चाहिए।

- राजा को हमेशा अपनी प्रजा के हित में कार्य करना चाहिए।
- एक अच्छी तरह से कार्य करने वाले राज्य के लिए न्याय का प्रशासन आवश्यक है।
- राजकोष का प्रबंधन राजा की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।
- युद्ध का संचालन न्याय और करुणा के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होना चाहिए।
- राजा को राज्य के मामलों पर सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद होनी चाहिए।

विदुरनीति एक कालातीत कार्य है जो आज भी प्रासंगिक बना हुआ है। यह भारतीय राजनीतिक दर्शन के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान संसाधन है, और इसकी अंतर्दृष्टि को किसी भी समाज में शासन की चुनौतियों पर लागू किया जा सकता है।

यहाँ विदुरनीति पर कुछ अतिरिक्त विचार दिए गए हैं

- विदुरनीति अपने समय का एक उत्पाद है, और यह प्राचीन भारतीय दुनिया के मूल्यों और चिंताओं को दर्शाता है। हालाँकि, इसकी अंतर्दृष्टि आज भी प्रासंगिक है, और उन्हें किसी भी समाज में शासन की चुनौतियों पर लागू किया जा सकता है।
- विदुरनीति एक व्यापक और व्यावहारिक कार्य है जो राजनीतिक दर्शन के विषय पर जानकारी का खजाना प्रदान करता है। इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह एक मूल्यवान संसाधन है।
- विदुरनीति अच्छी तरह से लिखी गई और समझने में आसान है, जो इसे पाठकों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए सुलभ बनाती है। यह इसे किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान संसाधन बनाता है जो भारतीय राजनीतिक दर्शन के बारे में अधिक जानना चाहता है, भले ही उनकी पृष्ठभूमि या विशेषज्ञता का स्तर कुछ भी हो।

विदुर नीति और चाणक्य नीति

यह एक और सभी के लिए सलाह की एक व्यापक पुस्तक है, हालांकि इसे विदुर और राजा धृतराष्ट्र के बीच एक संवाद के रूप में लिया गया है। जैसा कि महाकाव्य में कहानी है, पांडवों ने अपने चचेरे भाई कौरवों से अपने निर्वासन के पूरा होने पर अपनी सही भूमि का दावा किया।

राजा धृतराष्ट्र ने विदुर की सलाह मांगी। इस संग्रह को विदुर नीति कहा जाता है जिसमें गहन अंतर्दृष्टि होती है जिसे वह पांडवों को राज्य वापस करने के लिए सलाह देते हुए राजा के साथ साझा करता है। यह उचित और उचित होगा। संदेश और निर्देश आज भी बहुत उपयोगी और अर्थपूर्ण हैं। चूंकि यह प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत का हिस्सा है, इसलिए पाठ तीन हजार साल ईसा पूर्व का है।

इस महाकाव्य की अधिकांश कहानियाँ, आख्यान, शिक्षाएँ और पाठ हालांकि अच्छी तरह से प्रलेखित नहीं हैं फिर भी समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। उस समय राजा के मन में जो प्रश्न उठे थे, वे प्रश्न आज भिन्न नहीं हैं जो किसी सामान्य मनुष्य में उठते हैं। आश्चर्यजनक रूप से महात्मा विदुर द्वारा दिए गए उत्तर सदियों बीत जाने के बाद भी हमें प्रबुद्ध करते रहते हैं। राजा अपने समस्याग्रस्त प्रश्नों के सही उत्तर पाने के लिए उत्सुक है। हम कुछ विषयों पर विचार करेंगे और विदुर नीति के ज्ञान पर फिर से विचार करेंगे।

निद्राहीनता जैसे सरल विषयों पर बुद्धिमान विदुर कहते हैं कि जो लोग नींद से पीड़ित हैं वे प्रेमी हैं, जिनके पास कोई नैतिक मूल्य नहीं है, वे लोग जिनके पास कौशल है लेकिन संसाधनों की कमी है, वे लोग हैं जो छल के माध्यम से बलवानों के धन को हड़प लेते हैं। यह निस्संदेह आज भी अच्छा है।

विदुर का मत है कि बुद्धिमान शासकों के लिए आत्म–जागरूकता और आत्म–नियंत्रण जैसे आवश्यक गुण होते हैं, लक्ष्यों की स्पष्टता के साथ उदात्त आदर्श होते हैं। मेहनती होना अनिवार्य होने के साथ–साथ अच्छे नैतिक आचरण का होना भी है।

चाणक्य बुद्धिमान राजा का उल्लेख करते हुए कहते हैं – एक घमंडी राजा को कठिनाई के समय अपना अभिमान और अहंकार त्याग देना चाहिए। उसे निष्पक्ष विचारों का पालन करते हुए समाधान और स्पष्टीकरण खोजना चाहिए। इसी प्रकार मंत्रियों के बारे में वे कहते हैं जो व्यक्ति सुनने और सोचने में सक्षम है उसे राजा द्वारा मंत्री बनाया जाना चाहिए। वर्तमान शासकों और मंत्रियों को इन सलाहों को दोहराने की आवश्यकता उनके दृष्टिकोण में बदलाव लाने और कार्यों और जिम्मेदारियों के लिए जवाबदेह बनाने के लिए है। हम खुशी और सफलता को कैसे समझते हैं? बुद्धिमान ब्राह्मण का कहना है कि किसी व्यक्ति की सफलता दूसरों द्वारा आंकी जाती है जबकि खुशी आपको महसूस होती है। मन की शांति ही खुशी दे सकती है।

लोगों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है–असाधारण रूप से सक्षम जो औसत से ऊपर हैं, सामान्य रूप से सक्षम औसत से थोड़ा अधिक और सामान्य से थोड़ा अधिक हो सकता है। वह सलाह देते हैं कि उसी के अनुसार काम आवंटित किया जाना चाहिए। पहली श्रेणी में रणनीतिक महत्व के कार्य शामिल हैं जबकि दूसरी श्रेणी में मध्यम जटिलता के कार्य शामिल हैं और तीसरी श्रेणी में अन्य जो नियमित कार्य में लगे हुए हैं।

बुद्धिमान वे हैं जो सक्रिय श्रोता हैं, दूसरे क्या कहना चाह रहे हैं, उसे जल्दी से समझने की क्षमता रखते हैं, दूसरे क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते हैं और परिणामों की लालसा नहीं रखते हैं। उनका रवैया झूठा गर्व नहीं दर्शाता है। यदि आज भी इन मनोवृत्तियों को सचेत रूप से आत्मसात किया जाए तो वे स्वयं को और दूसरों को अपार शांति प्रदान करेंगे। किसी से भी सीखने की तत्परता और हमेशा विनम्र रहना बुद्धिमान और अच्छे आदमी के लक्षण हैं, नीति दोनों ही कहते हैं। विदुर विनम्रता के प्रतीक थे। हमें शायद ही विदुर के क्रोध की याद आती हो, हालांकि हस्तिनापुर के राजा और राजकुमार ने चूक की है, अपमान किया है, क्रोधित हुए हैं और दूसरों की निंदा की है। जैसा कि विदुर ने राजा से कहा कि बुद्धिमान पुरुषों द्वारा अपनाई गई अच्छी प्रथाओं के संकेत में योग्यता प्राप्त करना और लक्ष्य तक जल्दी पहुंचने के लिए कोई ढंग नहीं अपनाना शामिल है। चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति को कम से कम एक क्षेत्र में क्षमता विकसित करनी चाहिए और अन्य क्षेत्रों में समग्र दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए। यह सब कुछ करने और कम से कम एक का मालिक बनने की कोशिश करने जैसा है। सभी वर्गों के लोगों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करना आवश्यक है दोनों नीतियाँ चेतावनी देती हैं।

चाणक्य दृढ़ता से कहते हैं कि निम्नलिखित चार प्रकार के लोगों से कभी सलाह नहीं लेनी चाहिए, अर्थात् आधे–अधूरे ज्ञान वाले व्यक्ति, जानबूझकर काम में देरी करने वाले, स्वाभाविक रूप से आलसी और दूसरों की चापलूसी करने वाले। हमें कम ही पता है कि इन चार श्रेणियों से सलाह कितनी अयोग्य होगी। आज की भाषा में सलाह मुफ्त लगती है और लेने वाले और देने वाले उतने ही मूर्ख हैं जितना कि इस प्राचीन बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा था। चाणक्य के ज्ञान के मोती अर्थशास्त्र के शोधकर्ताओं और छात्रों द्वारा महसूस किए जाते हैं कि वे आज सबसे अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने व्यावहारिक दर्शन और वर्तमान में रहना सिखाया।

अतीत के लिए शोक नहीं करना चाहिए और भविष्य के लिए चिंता करनी चाहिए। बुद्धिमान वर्तमान की परवाह करते हैं और उसी के अनुसार अपने जीवन की योजना बनाते हैं। अतीत की चिंता और भविष्य की चिंता से क्या फायदा? चाणक्य के संदेश गहरे और महत्व से भरे हुए हैं। जब हम उनके सूक्तियों पर दोबारा गौर करते हैं तो यह आश्चर्यजनक है, वे आज भी सबसे अधिक प्रासंगिक और उपयुक्त हैं। क्या दूरदर्शी है !! इस श्लोक में वे कहते हैं, प्रभूतम कार्यम्पि वा तत्तपरः प्रकर्तुमिचति सर्वरंभेन तत्वाकार्य सिंघादेकम प्रचक्षते। चाहे वह बड़ा हो या छोटा, हमें प्रत्येक कार्य को अपनी पूरी क्षमता और शक्ति से करना चाहिए। यह गुण हमें शेर से सीखना चाहिए। ऐसा लगता है कि शेर का यह अनूठा गुण है। माना जाता है कि शेर कभी भी आधे मन से कोई काम नहीं करता है। यह अपनी पूरी प्रचंडता से खरगोश को मार डालता या हाथी पर हमला कर देता। कोई समझौता या सेट बैक नहीं होगा। यह उस दृष्टिकोण की बात करता है जो हमें लोगों और स्थितियों के प्रति होना चाहिए। पूरा ध्यान देना और केंद्रित रहना ही सफलता का मार्ग है

श्री कृष्ण के भक्त, विदुर कुरु–वंश के बुद्धिमान प्रधान मंत्री थे। श्रीकृष्ण के बाद वे पांडवों के सबसे पूजनीय सलाहकार थे। धृतराष्ट्र और पांडु के सौतेले भाई, विदुर को कुछ खातों के अनुसार धर्मराज (यमराज) का अवतार माना जाता था। जैसा

कि धर्मराज को सभी धर्मों (कर्तव्यों और आचार संहिताओं) का ज्ञाता माना जाता है, विदुर को धर्म के नियमों का विशेषज्ञ माना जाता था।

महात्मा विदुर अभीष्ट योजनाओं और शत्रुओं के कृत्यों की गोपनीयता की बुद्धिमत्ता की बात करते हैं और कहते हैं कि कृत्यों के समाप्त होने के बाद ही उन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए। इस प्रकार, यह व्यवसाय के रहस्यों के साथ विवेकपूर्ण होने और कभी भी किसी को गोपनीय जानकारी का खुलासा नहीं करने के नेतृत्व गुण को प्रदर्शित करता है।

विदुरनीति का कहना है कि लाभ कमाना किसी भी व्यवसाय का सबसे महत्वपूर्ण मानदंड माना जाता है। विदुर नीति का यह श्लोक लाभ के रूप में सदाचार और नैतिकता को अधिक महत्व देने वाले एक बुद्धिमान नेता के बारे में बात करता है। एक बुद्धिमान नेता वह है जो हर बार भौतिक लाभ के ऊपर नैतिक आचरण को चुनता है। एक बुद्धिमान नेता वह होता है जो आंतरिक रूप से अपनी क्षमता के अनुसार सर्वोत्तम प्रयास करने के लिए प्रेरित होता है और तदनुसार कार्य करता है। वे सूक्ष्म विवरणों पर ध्यान देते हैं और ध्यान देते हैं और किसी भी चीज को अप्रासंगिक या महत्वहीन नहीं मानते हैं। छंद में सबसे पहले जटिल विषयों को जल्दी से समझने की क्षमता का उल्लेख किया गया हैय इसे मानव मनोविज्ञान की जटिलताओं को समझने से जोड़ा जा सकता है। एक बुद्धिमान नेता के अन्य गुणों के बारे में महात्मा विदुर बात करते हैंरू धैर्यपूर्वक सुनने का कौशल, सावधानीपूर्वक निर्णय के साथ लक्ष्यों का पीछा करना और स्वार्थी इच्छाओं के साथ नहीं और दूसरों से पूछे बिना गपशप करना और चर्चा करना।

श्री विदुर स्वयं या दूसरों के लिए अप्राप्य असंभव लक्ष्यों को निर्धारित नहीं करने के लिए एक नेता की गुणवत्ता के बारे में बात करते हैं। एक अच्छा नेता नुकसान के सामने भावनात्मक बुद्धिमत्ता दिखाता है और नुकसान पर शोक करने में समय बर्बाद नहीं करता। वह दृढ़ है, हमेशा दृढ़ रहता है और किसी भी विपत्ति या कठिनाई के बीच हिम्मत नहीं हारता। एक बुद्धिमान नेता के गुण रखने वाले हमेशा किसी भी परियोजना को एक अच्छी तरह से सोची समझी योजना के साथ शुरू करते हैं और एक बार शुरू होने के बाद हमेशा पूरा होने तक कार्य करते हैं। अच्छे नेता कभी भी अपना उत्पादक समय बर्बाद नहीं करते और आत्म–नियंत्रण रखते हैं।

विदुर जी सभी के असली चरित्र को जानने के लिए एक नेता के बुद्धिमान गुण के बारे में बात करते हैं। यद्यपि यहाँ आध्यात्मिक अर्थ में बोला गया है, यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि एक नेता वह है जो मानव स्वभाव और व्यवहार में गहरी अंतर्दृष्टि रखता है। एक नेता को बुद्धिमान माना जाता है यदि वह इस तथ्य से अवगत है कि चीजें परस्पर संबंधित हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि चीजों के पीछे की बड़ी तस्वीर को देखने में सक्षम होने के लिए उसे पर्याप्त समझदार होना चाहिए। पद्य यह भी कहता है कि एक नेता को अच्छी तरह से पता होना चाहिए कि लोग अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किस तरह का सहारा लेंगेय इस तरह से वह इस तरह के साधनों के प्रति चौकस रह सकता है।

विचार विमर्श

महात्मा विदुर कहते हैं कि एक बुद्धिमान नेता हमेशा बुद्धिमानों से सीखने का प्रयास करता है और एक विद्वान व्यक्ति होता है। वह सदाचार (नैतिकता) और लाभ के बीच संतुलन को बुद्धिमानी से प्रबंधित कर सकता है अर्थात वह सदाचार से, नैतिक रूप से लाभ कमाता है और इसलिए खुशी प्राप्त करता है। एक अच्छा नेता, इस श्लोक के अनुसार वह है जो भाषण में मुखर है, विभिन्न विषयों पर चर्चा कर सकता है, तर्क–वितर्क के विज्ञान को जानता है अर्थात बहस में सफलतापूर्वक शामिल हो सकता है, बौद्धिक क्षमता रखता है और ग्रंथों के छिपे अर्थ की व्याख्या कर सकता है लाइनों के बीच पढ़ने की क्षमता से जुड़ा हुआ है, चाहे वह व्यावसायिक प्रस्ताव हो या पारस्परिक संबंध।

विदुर जी कहते हैं कि एक बुद्धिमान नेता भले ही अपने कार्यों से अपार धन, ज्ञान, शक्ति और समृद्धि प्राप्त करता हो, लेकिन वह कभी भी अहंकारी व्यवहार नहीं करता और विनम्र होता है। बुरे नेता के गुण, निश्चित रूप से, ऊपर के छंदों में बताए गए अच्छे गुणों के विपरीत और विरोधाभासी हैं।

विदुर जी कहते हैं कि एक मूर्ख नेता वह होगा जो अज्ञानी होते हुए भी अभिमानी हो, गरीब हो फिर भी हवा में महल बनाता हो और उच्च अवास्तविक इच्छाओं वाला हो। इसके अलावा, यह एक बुरा गुण है यदि वह बेईमानी और अनुचित तरीकों से बिना किसी प्रयास के धन और धन प्राप्त करना चाहता है। एक मूर्ख नेता वह होगा, इस श्लोक के अनुसार, जो अपने मामलों पर ध्यान देने के बजाय दूसरों के व्यवसाय से सरोकार रखता है और अपने दोस्तों के साथ विश्वासघात करता है। इसका मतलब यह है कि एक मूर्खतापूर्ण कार्य वह होगा जहां एक नेता अपने शुभचिंतकों के साथ धोखे से काम करता है और उन्हें दुश्मन मानता है।

महात्मा विदुर कहते हैं कि मूर्ख वह होगा जो एक ओर शत्रुओं को मित्र मानता है, उन पर विश्वास करता है, वहीं दूसरी ओर मित्रों के प्रति द्वेष और द्वेष रखता है। इससे पता चलता है कि एक नेता जो मूर्ख है वह दुश्मनों को दोस्त मानता है, मामलों पर उनकी सलाह लेता है जबकि अपने दोस्तों से नफरत और अविश्वास करता है। साथ ही, एक मूर्ख अगुवा दुष्ट और निंदनीय कार्यों में शामिल होगा, जैसे चोरी, गबन, या कोई अन्य गैरकानूनी कार्य। एक नेता जो अपनी परियोजनाओं को दूसरों के सामने प्रकट करता है, जो हर चीज के बारे में संदेह करता है और उन गतिविधियों में बहुत समय लगाता है जिन्हें मूर्ख बनने में कम समय लगना चाहिए। यहाँ, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि एक ओर नेता मूर्खतापूर्ण ढंग से महत्वपूर्ण विवरण प्रकट कर रहा हैय दूसरी ओर, वह अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चीज पर संदेह करता है। नियमित गतिविधियाँ जिनमें आदर्श रूप से कम समय लगना चाहिए – वह उनमें लगे रहने में अधिकतम समय व्यतीत करती है।

विदुर के अनुसार, एक मूर्ख नेता वह होगा जो बिन बुलाए स्थानों पर जाता है, उदाहरण के लिए, किसी चल रही चर्चा में बिना किसी कारण के प्रतियोगियों के कार्यालयों में जाना आदि। इस पद में आगे कहा गया है कि एक मूर्ख नेता वह होगा जो बिना पूछे बहुत बातें करता है, इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि कोई प्रशिक्षण या व्याख्यान देते समय, वह बिना

ब्रेक लिए और आगे बढ़ सकता है। इसके अलावा, एक मूर्ख नेता को उन लोगों पर भरोसा करने की आदत होती है जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और वे अविश्वसनीय हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष निकालने के लिए, यह विदुर और चाणक्य की नीति पर फिर से विचार करने, प्रतिबिंबित करने और फिर से जांचने का समय है और उन्हें एक और सभी के लिए शांति और करुणा से भरे नैतिक रूप से सार्थक और शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए हमारे परामर्श और निर्देशों के रूप में बनाता है। दोनों ने वाणी पर नियंत्रण को बहुत महत्व दिया। सभी अपशब्द अनकही हानि पहुँचाते हैं। कट जाने पर जंगल फिर से उग सकता हैय लेकिन तेज कंटीली जीभ से छेदा गया दिल आसानी से नहीं समा सकता। दोनों नीतियाँ धार्मिकता को बहुत महत्व देती थीं। ये सूक्तियां पुरुषों और महिलाओं के लिए बुनियादी संदेशों को सीखने, भूलने और फिर से सीखने के लिए सबक हैं। आइए हम बुद्धिमान विदुर और विवेकपूर्ण चाणक्य को नमन करें जिन्होंने हमारे भीतर अज्ञान, अहंकार और दंभ के अंधेरे को दूर करने के लिए ज्ञान का प्रकाश दिया।

संदर्भ

- अचारी आरआर। विदुर नीति – एक शूद्र सलाहकार की शिक्षा 2017.
- शेनॉय आर. विदुर नीति और आधुनिक प्रबंधन। आईएसओएल रिसर्च फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित 2012.
- खंडेलवाल एनएम। विदुर नीति का एक प्रबंधकीय विश्लेषण
- महाजन वी. विदुर नीति के विशेष संदर्भ में भारतिय नीति शास्त्र का अध्ययन 2006.
- गुरुप्रसाद, रथ जे. आध्यात्मिक लक्षण जो नेतृत्व के प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं–विदुर नीति से प्रतिबिंब 2017
- विदुर नीति 2009 में नैतिक मूल्य